RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन

श्रीकान्त वर्मा

शोध छात्र, इतिहास विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विद्यालय, प्रयागराज।

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा की जा रही लूट तथा उनकी किसान विरोधी नीतियों का परिणाम यह हुआ कि किसान बर्बाद हो गये। मझौले किसान भी घटकर भूमिहीन हो गये और कृषि चौपट हो गई। अकाल, प्राकृतिक आपदाओं तथा सिंचाई के सुविधाओं से स्थिति दिन–प्रतिदिन बदतर होती जा रही थी, लेकिन सरकार के भू–राजस्व में कमी नहीं आयी और उसे कड़ाई के साथ वसूला जा रहा था। किसान सरकार के चहेते प्रबल सर्मथक जमींदारों तथा महाजनों के चंगुल में फँस गये थे। इन्हीं स्थिति से बचने के लिए आन्दोलन के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं था।

स्वाधीनता आन्दोलन में जिन लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई उनमें आदिवासियों, जनजातियों और किसानों का अहम योगदान रहा है। स्वतंत्रता से पहले किसानों ने अपनी मांगों के सर्मथन में जो आन्दोलन किये वे गाँधी जी के प्रभाव के कारण हिंसा और राजनीति से ज्यादा प्रेरित थे। देश में नील पैदा करने वाले किसानों का आन्दोलन, पवाना विद्रोह, तेभागा आन्दोलन, चम्पारण का सत्याग्रह और बारदौली में जो आन्दोलन हुए थे इन आन्दोलनों का नेतृत्व महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे नेताओं ने किया था।

एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् 15 अगस्त 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। आशा बंधी देश के किसानों का भाग्य भी सुधरेगा, पर यह राजनीतिक स्वतंत्रता थी, आर्थिक नहीं। हाँलाकि प्रधानमंत्री भी किसानों के दर्द को समझते थे और उनकों जमीदारों की क्षमता से मुक्त कराने हेतु प्रतिबद्ध थे लेकिन यह केवल दीर्घकालीन योजनाओं द्वारा ही हो सकता था और उन्होंने इसी कार्य को अपनाया।

निजेई बोल आन्दोलन एक ऐसा आन्दोलन था जो स्वतंत्रता के पूर्व प्रारम्भ हुआ और 1947 में भी चल रहा था। यह उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख किसान आन्दोलन था। यह आन्दोलन बस्ती जनपद में चल रहा था। निजेई 'निजी' शब्द का पर्यायवाची है जिसका अर्थ है – वैयक्तिक। अतः इसका अर्थ निकलता है कि जमीन पर किसानों का वैयक्तिक अधिकार है। ब्रिटिश काल में लागू किये भू–राजस्व बंदोबस्त द्वारा किसानों से भूमि पर से स्वामित्व छीन लिया गया था और सरकार के पिट्ठू जमींदार वर्ग का भूमि पर अधिकार हो गया। बस्ती में भूमि पर राजपूतों, ठाकुरों तथा ब्राम्हणों का अधिकार था। जमीन किसान की थी पर अब इस वर्ग का दास बन गया।

किसानों के जीवन का एक मात्र साधन खेती ही था पर उपज पर उनका अधिकार न था। जमींदार तथा उनके कर्मचारी शासक आपस में ही बन्दरबाँट कर लेते थे और किसानों को पेट भरने के लिए भी अनाज नहीं बचता था। निजेई बोल आन्दोलन ने किसानों में जमीन पर मालिकाना अधिकार प्राप्त करने की प्रेरणा फूँक दी वे संगठित होकर इसके लिए संघर्ष करने लगे। स्वतंत्रता से पूर्व अनेक बार कांग्रेस के नेता यह स्वीकार कर चुके थे कि यह असमानता की संस्कृति समाप्त होनी चाहिए। स्वतंत्रता के उपरान्त भी कांग्रेस सरकार ने इस प्रतिबद्धता को दोहराया क्योंकि जमींदार, सामंत, एवं अन्य प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ आजादी से पहले ही कांग्रेस में जुड़ गई और अब कांग्रेस में शामिल होकर लोकसभा एवं विधान सभा में निर्वाचित होकर आ गयी थी अतः इसे मूर्त रूप नहीं दिया जा सका।

निजेई बोल आन्दोलन के दौरान किसानों ने यह माँग की कि भू–राजस्व तथा स्वामित्व के रिकार्ड की पुनः जाँच हो। यह आन्दोलन जोर पकड़ता गया और सरकार को यह माँग स्वीकार करनी पड़ी । अन्ततः किसानों को इसमें सफलता प्राप्त हुई। किसानों और जमींदारों के मध्य हिंसा, अशान्ति और तनाव बढ़ता जा रहा था। अतः सरकार ने इसके अन्त के प्रयास प्रारम्भ कर दिये और 1952 में उत्तर प्रदेश सरकार ने एक कानून पारित करके जमींदारी का उन्मूलन कर दिया।

स्वतंत्रोपरान्त भारत में किसान आन्दोलन की प्रकृति के सम्बन्ध में बी0एन0 सिंह तथा जनमेजय ने लिखा है '' स्वतंत्र भारत में किसान आन्दोलन क्षेत्रीय व स्थानीय समस्याओं को लेकर किये जाते थे। ये केन्द्रीय तथा राज्य सरकार की किसान विरोधी नीतियों के तहत किये जाते थे। इनके सामान्य मुद्दे होते थे। जैसे – गाँव को निरन्तर बिजली दी जाये। उत्पाद के दाम निश्चित किये जाये। कम सूद पर किसानों को ऋण दिया जाय।

जमींदारी व्यवस्था समाप्त होने के पश्चात् कृषि व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन आया और इसमें पूँजीपति वर्ग भी अप्रत्यक्ष रूप से शामिल हो गया। कृषि एक उद्योग बन गया और बड़े–बडें कृषि फर्म अस्तित्व में आये। इन पूँजीपतियों ने खेती को भी एक उद्योग के रूप में संचालन करना प्रारम्भ कर दिया। उनको अपने लाभांश की ही चिंता थी और कृषि

RRIJM 2015, All Rights Reserved

श्रमिकों की मजदूरी और कल्याण की ओर लेशमात्र भी ध्यान न था। कर्मचारी निर्धन श्रमिकों की पूरी मजदूरी नहीं देते थे। सरकार द्वारा प्रचलित किसान कल्याण और उद्धार की योजनाओं का भी लाभ नहीं मिल पाता था। किसान अतीत की भाँति शोषण व उत्पीड़न के शिकार बने रहे। जिनके चलते उन्होंने आन्दोलन किया।

स्वतंत्रता के उपरान्त अनेक किसान आन्दोलन हुए पर हरित क्रान्ति के दौरान जो किसान आन्दोलन हुए उनका अपना अलग स्थान और महत्व है। 1969 केन्द्रीय सरकार के गृह मंत्रालय ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें 1966–69 के काल में हुए किसान आन्दोलनों में उजागर की गई। किसानों की समस्याओं का विस्तार से उल्लेख किया गया तथा उनके प्रति सद्भावना दशाई गई। हाँलाकि इस रिपोर्ट में देश के विभिन्न राज्यों – बिहार, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब, मणिपुर, बंगाल, उत्तर प्रदेश सभी राज्यों में अभी तक हुए किसान आन्दोलन में उठाई गयी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था, पर यह सम्पूर्ण विषय वर्ग की मूलभूत समस्यायें हैं। अतः इनका सम्बन्ध उत्तर प्रदेश के किसानों से भी है। इनमें किसानों को खेती पर स्थायी अधिकार की गारंटी, मजदूरी में बृद्धि, जंगलों की फालतू जमीन को किसानों में बांटने , महाजनों आदि के शोषण से किसानों की रक्षा करना, कम ब्याज पर बैंकों से ऋण उपलब्ध कराने आदि माँगों का उल्लेख किया गया है तथा साथ ही साथ यह भी कहा गया था कि सरकार शीघ्र ही कोई कानूनी कार्यवाही करेगी।

स्वतंत्रता के पूर्व तथा पश्चात के कालों में किसान आन्दोलनों द्वारा उठाई गयी किसानों की समस्याओं और माँगों की प्रकृति में भारी अन्तर था। 1947 से पूर्व अर्थात् ब्रिटिश काल में इसका सम्बन्ध था और जमींदारों, सामन्तों, महाजनों और अधिकारियों द्वारा किये जा रहे शोषण तथा अत्याचार से रक्षा करना था। स्वतंत्रता के पश्चात् किसानों की प्रमुख मांगे, मजदूरी बृद्धि, भूमि उपलब्ध कराने तथा कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराने की थी।

उत्तर प्रदेश में किसान आन्दोलन में किसान यूनियन की प्रमुख भूमिका रही है और आज भी यह सक्रिय है वास्तव में भारतीय किसान यूनियन का जन्म पंजाब में हुआ था उस समय प्रकाश सिंह बादल, गुरूचरण सिंह व हरचन्द सिंह बरार पंजाब के प्रभावशाली किसान नेता थे। जब हरित क्रान्ति से इनको लाभ मिलना कम हो गया तब इन्होंने अपनी राजनीतिक गतिविधियाँ बढ़ाना शुरू कर दिया।

शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के किसान आन्दोलन के क्षितिज पर महेन्द्र सिंह टिकैत नेता के रूप में उतरे उन्होंने भारतीय किसान यूनियन को एक प्रकार से हाइजेक कर लिया और अब इसके आन्दोलन का केन्द्र उत्तर प्रदेश बन गया। टिकैत एक जुझारू और समझदार नेता थे उन्होंने आन्दोलन की सफलता के लिए हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ही प्रमुख सम्प्रदायों की एकता को आवश्यक समझा और उन्हें किसान आन्दोलन से जोड़े रखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वी0एन0सिंह, जनमेजय : भारत में सामाजिक आन्दोलन।
2. सिंह, राजेन्द्र : सोशल मूमेन्ट्स इन इण्डिया।
3. चक्रवर्ती आनन्द : भारत के किसान आन्दोलन।

RRIJM 2015, All Rights Reserved